IX

पाठ-3

कविता - स्वर्ग बना सकते हैं हम

(क) सबको मुक्त प्रकाश - --

प्रश्न1:- प्रकाश तथा समीरण का हमारे जीवन ----

उत्तर:- सूर्य का प्रकाश तथा समीरण अर्थात् वायु मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण है। मनुष्य इनके बिना जीवित नहीं रह सकता। यदि मनुष्य को ये दोनो ही मुक्त रूप से नहीं मिलेंगे तो जीवन बिताना कठिन हो जायेगा। सूर्य व वायु के बिना मनुष्य का जिन्दा रहना सम्भव नहीं है।

प्रश्न2:- यहाँ 'सबको' से क्या तात्पर्य है? समाज में-

उत्तर:- यहाँ 'सबको' से तात्पर्य पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक मनुष्य से है। समाज में शांति स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि इस पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक मनुष्य को एक समान अधिकार प्राप्त हों। सभी को एक समान सुख सुविधाएँ भी प्राप्त हो।

प्रश्न3:- 'विघ्न' शब्द का क्या अर्थ है? कवि ने ---

उत्तर:- 'विघ्न' शब्द का अर्थ है - रूकावट। कवि ने मानवता के विकास में आने वाली विघ्नों की बात की है जो मनुष्य ही आपस में एक दूसरे के लिए उत्पन्न करते हैं। ये बाधाएँ ही मानवता के विकास को रोक रही हैं। इन्हीं के कारण मनुष्य आपसी प्रेमभाव को भुलाकर एक दूसरे का शत्रु बना हुआ है।

प्रश्न4:- मानवता की राह रोककर पर्वत ----

उत्तर- इस पंक्ति के माध्यम से कवि बताना चाहता है कि किस प्रकार मनुष्य आपस में एक दूसरे के साथ द्वेष की भावना

रखते हैं। एक-दूसरे से ईर्ष्या करते हैं। एक दूसरे की उन्नति में बाधक बनना मनुष्य का स्वभाव बन गया है। मनुष्य की स्वार्थ व ईर्ष्या की भावना स्वस्थ समाज के निर्माण में बहुत बड़ी बाधा है।

(ख) न्यायोचित सुख सुलभ नहीं -----

प्रश्न1:- न्यायोचित शब्द का अर्थ स्पष्ट ---

उत्तर:- 'न्यायोचित' शब्द का अर्थ है जो न्याय में उचित हो। इससे कवि का अभिप्राय है कि पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक जीव के साथ उचित न्याय होना चाहिए। किसी के साथ भी भेदभाव न हो।

प्रश्न2:- मानव-मानव में आपसी टकराव का क्या ---

उत्तर:- मानव-मानव में आपसी टकराव का कारण है - स्वार्थ की भावना, ईर्ष्या की भावना। अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए मनुष्य एक दूसरे के साथ उचित व्यवहार नहीं करता। मनुष्य पूरा जीवन अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता रहता है।

प्रश्न3:- भीष्म पितामह के अनुसार इस आपसी

उत्तर:- भीष्म पितामह के अनुसार मानव के इस आपसी टकराव को तभी कम किया जा सकता है जब प्रत्येक मानव को अपने उचित अधिकार प्राप्त हो, उचित न्याय प्राप्त हो यदि मनुष्य को समानता दे दी जाए तो इस संसार में शांति स्थापित हो सकती है।

③

प्रश्न 5:- प्रस्तुत कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।

उत्तर:- प्रस्तुत कविता 'स्वर्ग बना सकते हैं' का केन्द्रीय भाव है कि इस धरती पर सभी को एक समान सुख-सुविधाएँ प्राप्त है। भीष्म पितामह के द्वारा धर्मराज युधिष्ठिर को यही उपदेश दिया है कि इस पृथ्वी पर ईश्वर के द्वारा सभी सुख सुविधाएँ निःशुल्क प्रदान की गई है। सभी को समान रूप से इन्हें प्रयोग करने का अधिकार है।

① पाठ-3. स्वर्ग बना सकते हैं

पदयांश ग -
(ग) जब तक मनुज - मनुज का
जब तक मनुज - मनुज का यह सुख ---

प्रश्न1:- जब तक मनुज - मनुज का यह सुख ---
उत्तर:- इस पंक्ति का अर्थ है कि इस पृथ्वी पर सभी मनुष्यों की आवश्यकताएँ एक समान हैं। ईश्वर के द्वारा भी सभी को एक समान सुख सुविधाएँ प्रदान की गई हैं। इसी कारण यहाँ सबको एक समान ही अधिकार प्राप्त होने चाहिए।

प्रश्न2:- मनुष्य किसे भूलकर किस शंका में---
उत्तर:- कवि के अनुसार मनुष्य अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को भुलाकर केवल आपसी झगड़ों में उलझ गया। वह सुख प्राप्ति के लिये हर समय अपने स्वार्थों को पूरा करने में लगा रहता है।

प्रश्न3:- प्रस्तुत पद्यांश में मानव की किस----
उत्तर:- प्रस्तुत पदयांश में मानव की स्वार्थी प्रवृत्ति की ओर संकेत किया गया है। वह केवल अपने परिवार को सुखी देखना चाहता है, उसके लिए दूसरे व्यक्ति को चाहे कितना भी कष्ट क्यों न हो लेकिन यह उचित नही है क्योंकि पृथ्वी पर सभी मनुष्यों के लिए ईश्वर के द्वारा बराबर सुविधाएँ और अधिकार प्रदान किये गए हैं।

प्रश्न4:- नीचे लिखे शब्दों के अर्थ ----
उत्तर:- मानव, बराबर, शांत, सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति, एकत्र करना, दुविधा आशंका, शोर।

पदयांश घ -
(घ) प्रभु के दिए गए

प्रश्न1:- प्रथम पदयांश में कहाँ क्या ---
उत्तर:- प्रथम पदयांश में कवि ने इस पृथ्वी पर बिखरे हुए सुख सुविधाओं की बात की है जो ईश्वर द्वारा रचित प्रकृति द्वारा मानव को प्रदान किये गये है। कवि ने यह भी बताया है कि ईश्वर द्वारा रचित प्रत्येक वस्तु बहुमूल्य है।

प्रश्न2:- सब हो सकते हैं तुष्ट पंक्ति का भाव -
उत्तर:- 'सब हो सकते हैं तुष्ट' पंक्ति का भाव है कि इस पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य सुखी हो सकता है ऐसा तभी संभव हो सकता है जब प्रत्येक मानव को उचित न्याय मिले और उचित व बराबर अधिकार भी प्राप्त हों

प्रश्न3:- चाहें तो शब्द का प्रयोग कवि ने --
उत्तर:- 'चाहें तो' शब्दों का प्रयोग कवि ने हम सभी देशवासियों के लिये किया है कवि बताना चाहता है कि इस पृथ्वी पर ईश्वर द्वारा दिए गए संसाधनों की कमी नहीं है, यदि हम सभी उचित रूप से इनका प्रयोग करें तो अपनी भारत भूमि को स्वर्ग बना सकते हैं इसके लिए हमें आपस में समानता का व्यवहार करना होगा

प्रश्न4:- प्रस्तुत कविता में किसने, किसे और क्या?
उत्तर:- प्रस्तुत कविता में उस समय का वर्णन किया गया है जिस समय महाभारत का युद्ध चल रहा था। उस समय

③

भीष्म पितामह धर्मराज युधिष्ठिर को शिक्षा दे रहे थे। उसी प्रसंग को कवि ने कविता का रूप देकर प्रत्येक मानव को समझाने का प्रयास किया है कि इस पृथ्वी पर जो भी सुख सुविधाएं ईश्वर प्रदत्त हैं वे निःशुल्क हैं। सभी मानव जाति को मिल-जुलकर इसका उपयोग करना चाहिए। आपस में समानता का भाव होना चाहिए।

कविता - 4

वह जन्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी

पद्यांश 1;-

क) ऊंचा खड़ा हिमालय आकाश चूमता है,

प्रश्न1;- 'सिंधु' शब्द का क्या अर्थ है? कवि ने इसके --

उत्तर;- सिंधु शब्द का अर्थ है समुद्र। इसके सन्दर्भ में कवि ने बताया है कि यह हिमालय पर्वत के चरणों में बहता हुआ ऐसा लग रहा है, मानो उसके चरणों को धो रहा हो। समुद्र की जलधारा झूमती हुई दृष्टिगोचर हो रही है।

प्रश्न2;- किसकी छटा निराली है? और क्यो?

उत्तर;- प्रस्तुत कविता में कवि ने गंगा, यमुना, सरस्वती इन तीनो नदियों की छटा निराली बताते हुए कहा है कि ये भारत भूमि को हरा-भरा बना रही हैं। इनकी छटा इसलिए निराली है क्योंकि भारतवर्ष की प्राकृतिक सुंदरता को बढाती है और अमृत के समान जल भी प्रदान करती हैं।

प्रश्न3;- कवि ने भारतभूमिको किन-किन नामों से --

उत्तर;- प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने भारत-भूमि को पुण्यभूमि, स्वर्णभूमि जन्मभूमि व मातृभूमि इन अलग-अलग नामों से सम्बोधित किया है क्योंकि यह भूमि हमारे पूर्वजों द्वारा किये गये सदकार्यो के कारण पुण्य-भूमि बन गई है। अपने गौरवशाली अतीत के कारण स्वर्ण के समान कीमती हो गई। इसी भूमि पर जन्म होने के कारण यह जन्मभूमि है। इसी धरती ने कवि को माता के समान दुलार व ममता दी, इसी की

रज में पलकर बड़ा होने के कारण यह कवि की मातृभूमि भी है।

प्रश्न4:- निम्न शब्दों के अर्थ -

नित - प्रतिदिन छटा - सुन्दरता निराली - अनोखी त्रिवेणी - वह स्थान जहाँ तीन नदियों का संगम हो। पुण्यभूमि - पवित्र भूमि जन्मभूमि - जन्म जहाँ पर हुआ

पद्यांश ख - झरने अनेक झरते, जिसकी पहाड़ियों में...

प्रश्न1:- झरने तथा चिड़िया के सम्बन्ध में कवि ने ---

उत्तर:- प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन करते हुए बताया है कि ऊँची-ऊँची पहाड़ियों से अनेक झरने बहते हुए सबका हृदय अपनी ओर आकर्षित करते हैं तथा चिड़िया काँटेदार झाड़ियों में भी अपनी मस्ती में चहचहाती हैं जो सिखाती है कि हमें प्रतिकूल परिस्थिति में भी प्रसन्न रहना चाहिए।

प्रश्न2:- 'अमराइयाँ' शब्द से कवि का क्या आशय है-

उत्तर:- 'अमराइयाँ' शब्द से कवि का आशय है प्रत्येक स्थान पर मिलने वाले आम के बगीचे से है। कवि ने इन बगीचों का वर्णन करते हुए कहा है कि इन फलों से लदे वृक्षों पर, इनकी डालियों पर कोयल का मीठा स्वर कहीं न कहीं सुनाई पड़ जाता है।

प्रश्न3:- 'मलय-पवन' के विषय में कवि ने क्या कहा है इसकी क्या ----

उत्तर:- 'मलय पवन' के विषय में कवि ने कहा है कि मलयाचल पर्वत से बहने वाली शीतल

Date
Page

व सुगंधित वायु सबको अच्छी लगती है सबके तन, मन को शीतलता प्रदान करती है इस वायु से सबका हृदय आनंदित हो जाता है।

प्रश्न५:- प्रस्तुत-पद्यांश के आधार पर भारत के प्राकृतिक
उत्तर:- प्रस्तुत पद्यांश के आधार पर हम कह सकते हैं कि कवि ने भारत भूमि के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा है कि भारत की उत्तर दिशा में हिमालय पर्वत मुकुट के रूप में इसकी शोभा को बढा रहा है। नदियाँ भी इसकी धरती को हरी-भरी रखती हैं। पहाड़ियों से बहते झरने, शीतल हवाएँ सभी के मन को आनंद से भरते हैं। कहीं फूलों की घाटियाँ हैं तो कहीं ऊँचे-ऊँचे वृक्ष देश की सुंदरता में चार-चाँद लगाते हैं।

पद्यांश ग:- जन्में जहाँ थे रघुपति, जन्मी जहाँ थी--
प्रश्न।:- रघुपति कौन थे? उनके बारे में आप---
उत्तर:- रघुकुल में जन्म लेने के कारण श्री रामचन्द्रजी को ही रघुपति कहा जाता है। श्री रामचन्द्र जी अयोध्या के राजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र थे। इनकी माता का नाम कौशल्या था। इनका विवाह महाराजा जनक की पुत्री सीता के साथ हुआ था। ये पिता का वचन पूरा करने के लिए चौदह वर्ष के वनवास को गए थे।

प्रश्न२:- श्री कृष्ण कौन थे? उनके द्वारा किए गए किस महान कार्य का जिक्र कवि ने किया

है? स्पष्ट लिखिए।

उत्तर:- श्रीकृष्ण देवकी-वसुदेव के पुत्र थे। इनका जन्म मथुरा में कंस की कारागार में हुआ किंतु इनका पालन-पोषण ब्रज में यशोदा माता और नंद बाबा के द्वारा किया गया। कवि के द्वारा बताया गया है कि भगवान श्री कृष्ण ने महाभारत के युद्ध में अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। जिसके द्वारा अर्जुन को धर्म का मार्ग चुनने की प्रेरणा मिली और उसने धर्म की रक्षा के लिये युद्ध किया।

प्रश्न 3:- गौतम बुद्ध कौन थे? उन्होंने संसार को क्या संदेश दिया समझाकर लिखिए।

उत्तर:- गौतम बुद्ध कपिलवस्तु के महाराज शुद्धोधन के पुत्र थे। इनकी माता का नाम माया था। जन्म के समय इनका नाम गौतम रखा गया था किंतु इनकी सिद्धियों को देखकर सब इन्हें सिद्धार्थ के नाम से जानने लगे। भगवान बुद्ध ने संसार अहिंसा का पाठ पढाया, धर्म का मार्ग दिखाया।

प्रश्न 4:- राम, श्रीकृष्ण, गौतम के उदाहरण किस - - -

उत्तर:- राम, श्रीकृष्ण, गौतम के उदाहरण द्वारा कवि महापुरुषो द्वारा दिए गए धर्म के संदेश व सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने के संदर्भ में बताना चाहता है कि किस प्रकार भारतवर्ष के महापुरुषो ने अपने देश की ख्याति को चारों तरफ फैलाकर इसकी महानता को सिद्ध कर दिया। हमें भी उनके बताए मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

18/5/20 ①

कहानी 3- महायज्ञ का पुरस्कार

अभ्यास कार्य:

प्रश्न1:- "यहाँ थोड़ी देर रुककर विश्राम कर लेना चाहिए।"

(i) वक्ता कौन है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उ०:- इस वाक्य का वक्ता स्वयं सेठ है। सेठ बहुत ही धनी धर्म परायण व दयालु थे। लेकिन वर्तमान समय में दुर्भाग्यवश सेठ को गरीबी का सामना करना पड़ रहा है। हालत यहाँ तक पहुँच गई कि भूखों मरने की नौबत आ गई है।

(ii) वक्ता थोड़ी देर क्यों रुकना चाहता था? उसने वहाँ क्या किया?

उ०:- वक्ता कुंदनपुर जाते हुए, रास्ते में थक गया, वह पसीने से तरबतर था। थोड़ा आराम करना चाहता था और भोजन भी करना चाहता था। उसने वहाँ रुककर थोड़ा आराम तो कर लिया लेकिन भोजन न कर सका क्योंकि अपनी सारी रोटियाँ एक भूखे कुत्ते को खिला दी।

(iii) वक्ता को कहाँ जाना था और क्यों? समझाकर लिखिए। घर के सदस्यों की विशेषता बताइए।

उ०:- वक्ता को कुंदनपुर नाम के नगर में एक धनी व्यक्ति के पास जाना था। जिनका नाम धन्ना सेठ था। वक्ता को उनके हाथो अपना यज्ञ (पुण्यकर्म) बेचना था जिसके बदले वह कुछ पैसा प्राप्त करना चाहता था जिससे कुछ समय वह अपने भोजन की व्यवस्था कर सके। धन्ना सेठ की पत्नी के विषय में यह बात प्रचलित थी कि उसे कोई दैवीय शक्ति प्राप्त है जिससे वह तीनो लोको की बात जान लेती है।

(iv) वक्ता ने अपने गन्तव्य पर पहुँचकर क्या कहा? वे अपने उद्देश्य में सफल क्यों नहीं हुए स्पष्ट कीजिए।

उ०:- वक्ता ने अपने गन्तव्य पर पहुँचकर कहा कि "मैं संकट में हूँ और एक यज्ञ आपके हाथ बेचने आया हूँ, वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका क्योंकि उ मानना था कि भूखे को अन्न देना मानव का कर्तव्य है और उसका मूल्य लेना उचित नहीं है।

19/5 (2)

कहानी-3 महायज्ञ का पुरस्कार

(2) "हाँ, वही जो आज आपने किया।"

(i) वक्ता कौन है? उसका पूर्ण परिचय दीजिए।

उ०:- वक्ता कुंदनपुर नगर के धन्ना सेठ की पत्नी है। उनके विषय में सभी लोग कहा करते थे कि उनकी पत्नी को कोई दैवीय शक्ति प्राप्त है, जिससे वे तीनो लोकों की बात जान लेती हैं।

(ii) 'आपने' का सम्बोधन किसके लिए किया गया है? वह व्यक्ति किस संकट में है?

उ०:- 'आपने' का सम्बोधन सेठ जी के लिए किया गया है वह व्यक्ति गरीबी के कारण मुसीबत में है। इस समय उसके लिए दो समय के भोजन की व्यवस्था करना भी कठिन है। उसी के कारण वह धन्ना सेठ के हाथ अपने द्वारा किया एक यज्ञ बेचना चाहता है।

(iii) आज श्रोता ने क्या किया तथा क्यों? उसने उसे महायज्ञ क्यों नहीं माना।

उ०:- आज श्रोता ने रास्ते में एक पेड़ के नीचे आराम करते समय भोजन करना चाहा लेकिन भूख से छटपटाते कुत्ते को अपनी सारी रोटियाँ खिला दी। उसने उसे महायज्ञ नहीं माना क्योंकि उसका मानना था कि किसी भूखे को भोजन कराना मानव का कर्तव्य है यह कोई महायज्ञ नहीं।

(iv) श्रोता की दो चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए आपकी दृष्टि में उनका कार्य कैसा था?

उ०:- श्रोता स्वभाव से बड़े ही विनम्र तथा दयालु थे। वह धर्मपरायण और कर्तव्यपरायण भी थे। हम सबकी दृष्टि में उनके द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य धर्म से युक्त था। कोई भी साधु-संत उनके द्वार से निराश नहीं लौटता था। यह उनकी मानवता ही थी। इसे वे कोई उपकार नहीं मानते थे केवल अपना कर्तव्य ही समझते थे।

(3) "सेठ के चरणों की रज मस्तक पर लगाते हुए बोली-"
-"धीरज रखिए भगवान से भला करेगा।"

(i) वक्ता कौन है? धीरज रखने के लिए क्यों कह रही है?

उ०:- इस वाक्य की वक्ता सेठ की पत्नी सेठानी है। वह सेठ से धीरज रखने के लिए कह रही है क्योंकि उसने सेठ की बात सुनकर सोचा कि यदि उसके पति ने इतनी कठिन परिस्थिति में भी अपना धर्म नहीं छोड़ा तो फिर धर्म के पथ से विचलित नहीं होना चाहिए।

(ii) धीरज शब्द का अर्थ लिखिए। वक्ता के तत्कालीन मनोभावों को स्पष्ट कीजिए।

उ०- धीरज शब्द का अर्थ है हिम्मत / धैर्य रखना। वक्ता इस समय मानसिक रूप से बहुत परेशान है लेकिन उसके पास संतोषरूपी धन है वह बहुत ही धैर्यशील है। वह कर्तव्य का पालन करना ही मानवधर्म मानती है।

(iii) वक्ता के ठोकर खाने का क्या कारण था? ठोकर खाने के कारण उसने किससे क्या कहा?

उ०:- वक्ता के ठोकर खाने का कारण था दलान की दहलीज के सहारे ऊपर की ओर उठा हुआ पत्थर। ठोकर खाने के कारण वह आश्चर्यचकित हो गई और उसने सेठी जी से कहा कि - आकर, देखो तो यह पत्थर कैसे ऊपर की ओर उठ गया है।

(iv) धीरज रखने का पुरस्कार उसे किस रूप में मिला? समझाकर लिखो।

उ०:- धीरज रखने का पुरस्कार उसे एक विशाल हीरे, जवाहरात से भरे तहखाने के रूप में मिला। जिसे देखकर उनकी आखें चौंधियाने लगी। यह ईश्वर की ही कृपा थी। सेठ ने विपत्ति के समय भी अपना मानवता के प्रति कर्तव्य निभाया, खुद भूखे रहकर भूखे व लाचार कुत्ते को अपनी सारी रोटियाँ खिला दी। इसी धर्मपरायणता का परिणाम उन्हें मिल गया था।

③ कहानी - महायज्ञ का पुरस्कार

गद्यांश. N.4

4- इस बेचारे मूक और बेबस जीव को एक रोटी और मिल जाए तो निश्चय ही इसमें इतनी ताकत आ जाएगी कि किसी बस्ती तक पहुँच सकेगा।

(i) यह मूक और बेबस जीव कौन है? इसे बेचारा क्यों कहा गया है?

उत्तर:- यह 'मूक और बेबस' जीव एक भूखा कुत्ता है। उसे बेचारा इसलिए कहा गया क्योंकि वह न तो बोल सकता और नही किसी से कुछ माँग सकता इस समय वह भूखा भी है।

(ii) सेठ जी कहाँ जा रहे हैं और क्यों?

उत्तर:- सेठ जी कुंदनपुर नाम के नगर में जा रहे हैं क्योंकि अचानक स्थिति बदलने के कारण गरीबी से उनकी हालत ठीक नहीं है। अपनी इस गरीबी की दशा से उबरने के लिए कुंदनपुर नगर के धन्नासेठ के हाथ अपना एक यज्ञ बेच देना चाहते हैं।

(iii) एक-एक करके सेठ जी ने उसे कितनी रोटियाँ खिलाई और उसे रोटियाँ खिलाते समय उनके मन में क्या विचार थे?

उत्तर:- एक-एक करके सेठ जी ने उसे चार रोटियाँ खिलाई और उसे रोटियाँ खिलाते समय उनके मन में विचार आया कि यह बेचारा न तो बोल सकता और न ही कमजोरी के कारण यहाँ से दूर जा सकता। यदि इसे यह अंतिम रोटी भी मिल जाए तो इसमें इतनी ताकत आ जाएगी कि यह पास की किसी बस्ती तक पहुँच जाए।

(iv) प्रस्तुत पाठ द्वारा लेखक हमें क्या संदेश देना चाहता है? अपने विचार लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- प्रस्तुत पाठ द्वारा लेखक हमें संदेश देना चाहता है कि हम सभी को दान करने के लिए किसी दिखावे की आवश्यकता नहीं है हमें अपने जीवन में दीन-दुखियों व असहाय पशु-पक्षियों की रक्षा करनी चाहिए। जीवों की रक्षा करना, सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है। हमें वही व्यवहार करना चाहिए जो मानवता के लिए उचित है, मानव के लिए यही महायज्ञ है।

प्र० 5 कुछ सीढ़ियाँ उतरते ही इतना प्रकाश सामने आया कि उनकी आँख चौंधियाने लगी।

(i) 'उनकी' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है? परिचय दीजिए।

उत्तर:- 'उनकी' शब्द का प्रयोग सेठ और सेठानी के लिए किया गया है। कहानी के अनुसार दोनो अचानक ही अपने जीवन में आयी गरीबी से निराश है लेकिन उसे दूर करने का उपाय करते समय सेठ ने अनजाने ही एक मूक जीव की सेवा की जो एक महायज्ञ था।

(ii) प्रकाश कहाँ था? और उनकी आँखे क्यों चौंधियाने लगी?

उत्तर:- प्रकाश उन्हीं के घर में चमत्कार के द्वारा बने विशाल तहखाने में था। तहखाने मे हीरे जवाहरात की जगमगाहट थी। जिससे उनकी आँखे चौंधियाने लगी थी। यह सब ईश्वरीय शक्ति की ही कृपा थी।

(iii) निस्तब्ध खड़े सेठ-सेठानी को किसकी क्या बात सुनाई दी? स्पष्ट शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- निस्तब्ध खड़े सेठ सेठानी को एक दिव्य वाणी सुनाई दी। जिसमें कहा गया ओ! सेठ अपने आप भूखे रहकर अपना कर्तव्य मानकर प्रसन्नचित्त तुमने मरणासन्न कुत्ते को चारो रोटियाँ खिलाकर उसकी जान बचाई। यह उस महायज्ञ का ही पुरस्कार है।

(iv) आपकी दृष्टि में सेठ ने उस धन का क्या किया होगा? कल्पना के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर:- हम अपनी कल्पना के आधार पर कह सकते है कि सेठ ने उस धन में से भी कुछ धन अवश्य ही परोपकार में लगाया होगा क्योंकि सेठ उदार हृदयी परोपकारी व्यक्ति था। उसकी परोपकारी प्रवृत्ति ने अवश्य ही उसे ऐसा करने की प्रेरणा दी होगी। अपने परोपकारी स्वभाव के कारण ही ही उसे ईश्वर की कृपा से खजाना प्राप्त हुआ था।

कहानी - 4
नेता जी का चश्मा

अभ्यास कार्य

गद्यांश :- पान वाले के खुद के मुँह में पान ठूँसा ---

प्रश्न (i) हालदार साहब को कौन सी आदत पड़ ---

उत्तर :- हालदार साहब को हर बार कस्बे से गुजरते समय चौराहे पर रुककर पान खाते हुए मूर्ति को ध्यान से देखने की आदत पड़ गई थी।

प्रश्न (ii) हालदार साहब ने कौन-सा प्रश्न पूछा ---

उत्तर :- हालदार साहब ने प्रश्न पूछा कि नेता जी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है? पान वाले ने इसके उत्तर में बताया कि नेता जी का चश्मा कैप्टन चश्मे वाला बदलता है।

प्रश्न (iii) कैप्टन कौन था? वह क्या करता था और क्यों?

उत्तर :- कैप्टन चश्मेवाला एक साधारण सा चश्मा बेचने वाला आदमी थी। उसे देखकर लगता था कि शायद उसे नेता जी की मूर्ति बिना चश्मे अच्छी नहीं लगती थी इसलिए वह प्रतिदिन चश्मा बदल दिया करता था और साथ ही अपने चश्मों की बिक्री भी किया करता था।

प्रश्न (iv) पान वाले के व्यक्तित्व का वर्णन अपने ---

उत्तर :- पानवाला एक काला, मोटा व खुशमिजाज आदमी था, जो पूरा समय पान खाता रहता था। कस्बे से गुजरते समय वह हालदार साहब के लिए एक मनोरंजन का साधन भी बन गया था।

गद्यांश:- कस्बा बहुत बड़ा नहीं था

प्रश्न1:- कस्बे की रूपरेखा का वर्णन कीजिए।

उत्तर:- कहानी के अनुसार कस्बा तो बहुत बड़ा नहीं था। लेकिन बाजार, कुछ पक्के मकान बच्चों के पढ़ने के लिए एक स्कूल, कारखाना, सिनेमाघर, शहर के विकास के लिए एक नगरपालिका थी। इसी करबे में चौराहे पर सुभाष चन्द्र बोस की एक मूर्ति थी।

प्रश्न2:- कस्बे के रख-रखाव की जिम्मेदारी किसकी थी।

उत्तर कस्बे के रखरखाव की जिम्मेदारी नगरपालिका की ही थी। जो शहर के विकास के लिए कभी सड़कें पक्की करवाती तो कभी कबूतरों के लिए छत पक्की करवाती। कभी अवसर के अनुसार कवि-सम्मेलन आदि भी करवा दिया करती थी।

प्रश्न3:- मूर्ति बनाने के लिये स्थानीय कलाकार को -

उत्तर:- मूर्ति को देखकर ऐसा लगता था जैसे कि अच्छे मूर्तिकारों का अभाव था। अधिक बजट के चलते कस्बे के एक इकलौते स्कूल के इकलौते ड्राइंग मास्टर को ही यह मूर्ति बनाने का काम सौंप दिया गया। उसी ने यह साधारण सी मूर्ति बनाई।

प्रश्न4:- कहानी किसके बारे में है? वह छोटा सा हिस्सा क्या है? — —

उत्तर:- कहानी नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा के विषय में है तथा वह छोटा सा हिस्सा नेता जी की मूर्ति पर लगा हुआ चश्मा है। लेखक हमें संदेश देना चाहता है कि निश्चित सीमाओं से घिरा कोई नाम ही देश नहीं होता बल्कि

वहाँ के रहने वाले नागरिकों से देश बनता है। किसी देश के विकास में वहाँ के प्रत्येक नागरिक का योगदान होना बहुत आवश्यक है।

गद्यांश ३:- लेकिन भई एक बात अभी भी समझ में---

प्रश्न १:- वक्ता तथा श्रोता कौन है? वे किस विषय -

उत्तर १:- प्रस्तुत वाक्य का वक्ता हालदार साहब और श्रोता पानवाला है। इस समय पान वाले की दुकान पर हैं जो नेता जी की मूर्ति पर लगाए जाने वाले चश्मे के विषय में बातें कर रहे हैं।

प्रश्न २:- वक्ता की कौन सी बात समझ में नहीं आई--

उत्तर २:- वक्ता हालदार साहब को नेता जी की मूर्ति पर हर बार नया चश्मा देखकर, यह बात समझ में नहीं आई कि चश्मा बदलता कौन है? क्योंकि वह जितनी बार भी वहाँ से गुजरते चश्मा बदला हुआ मिलता था।

प्रश्न ३:- वक्ता की बात का उत्तर श्रोता ने क्या---

उत्तर ३:- वक्ता की बात का उत्तर देते हुए श्रोता ने कहा कि शायद मूर्ति बनाने वाले ड्राइंग मास्टर चश्मा बनाना भूल गए होंगे।

प्रश्न ४:- श्रोता की बात का वक्ता पर क्या प्रभाव---

उत्तर ४:- वक्ता श्रोता की बात से संतुष्ट नहीं हो पाया। वह चकित भी हुआ क्योंकि वह मूर्ति बनाने वाले के विषय में यही सोच रहे थे कि उसने पत्थर से मूर्ति बना तो अवश्य दी लेकिन चश्मा या तो बना नहीं बनाया भी होगा तो अवश्य ही टूट गया होगा

गद्यांश-५:- पर कोई न कोई चश्मा होता जरूर...

प्रश्न १:- हालदार साहब की यात्रा को धूल भरी...

उत्तर:- लेखक की यात्रा को धूल भरी यात्रा कहा गया क्योंकि जिस रास्ते से लेखक यात्रा किया करते थे वह पक्की सड़क वाला मार्ग न होकर कच्चा मार्ग हुआ करता था लेखक को इस कस्बे में आकर नेता जी की मूर्ति पर लगा चश्मा देखकर आनंद मिलता था।

प्रश्न २:- हालदार साहब कितने वर्ष से कहाँ से...

उत्तर:- हालदार साहब लगभग दो वर्ष से इस कस्बे से गुजरते थे। वे चौराहे पर पहुंचकर नेता जी की मूर्ति के बदलते हुए चश्मों को कौतुहलता से देखा करते थे।

प्रश्न ३:- पान वाले की कौन सी बात हालदार...

उत्तर:- हालदार साहब को पानवाले द्वारा कैप्टन चश्मे वाले का मजाक उडाना अच्छा नहीं लगा। कैप्टन चश्मेवाला एक साधारण सा आदमी था। जो चश्में बेचकर अपना गुजारा किया करता था, लेकिन वह सच्चा देश भक्त था। देशभक्ति की भावना के कारण ही वह नेताजी की मूर्ति पर प्रति-दिन चश्मा बदल दिया करता था।

प्रश्न ४:- एक दिन हालदार साहब ने क्या देखा...

उत्तर:- एक दिन हालदार साहब ने देखा कि मूर्ति पर कोई भी, कैसा भी चश्मा नहीं था। उस दिन पान की दुकान बंद होने के कारण उनकी जिज्ञासा समाप्त न हो सकी। दूसरी

बार पान वाले से ज्ञात हुआ कि कैप्टन चश्मे वाले की मृत्यु हो गई। यह सुनकर उन्हें बहुत दुःख हुआ।

SYLLABUS FOR HALF YEARLY EXAMS

कहानी 1 to 4 अभ्यास कार्य
शब्द - अर्थ आदि

कविता 1 to 4 अभ्यास कार्य
शब्द - अर्थ आदि

हिन्दी व्याकरण - निबंध 1 to 20

पत्र - 1 to 10
औपचारिक
पत्र अनौपचारिक-
1 to 10

मुहावरे पर आधारित कहानी - 1 to 10

अपठित गद्यांश 1 to 10

चित्र आधारित कहानी 1 to 10

विलोम शब्द, पर्यायवाची, मुहावरे
तत्सम - तद्भव आदि, सभी के लिए
1½ HALF PAGE CAN LEARN।